शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई, जिला–दुर्ग (छ.ग.)

पंजीयन प्रपत्र

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय–वर्तमान संदर्भ में महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता

दिनांक 07 मार्च 2020

नाम–
पद–
विषय–
महाविद्यालय / विश्वविद्यालय / संस्था का नाम एवं पता–
दूरभाष क्रमांक–मो.–
निवास–
कार्यालय–
ई–मेल–
प्रस्तुत किये जाने वाले शोधपत्र का शीर्षक–

पंजीयन शुल्क–.....नगद / .....
ड्राफ्ट नं.–..... / चेक नं. .....
आगमन की तिथि व समय–
प्रस्थान की तिथि व समय–

शोधपत्र प्रस्तुतकर्ता / प्रतिभागी का संवर्ग–
विषय विशेषज्ञ / प्राध्यापक / अतिथि एवं ज.भा.
के व्याख्याता / शोधछात्र / संस्था के अधिकारी /
स्थानीय प्रतिनिधि / अन्य

स्थान–
दिनांक–

हस्ताक्षर
(नाम व पद)

विषय प्रस्तावना –

महात्मा गाँधी एक विचारक, चिंतक, दार्शनिक, समाज–सुधारक, आन्दोलनकर्ता होने के साथ जननायक भी थे। उन्होंने भारत की साधारण जनता में अपने समय के सबसे ताकतवर साम्राज्य से संघर्ष करने का आत्मविश्वास पैदा किया। संघर्ष के नये औजार और तौर–तरीके विकसित किये। गाँधी जी पश्चिमी सभ्यता से आक्रान्त और भयभीत नहीं थे। उन्होंने समस्त भारतीय परंपरा को आत्मसात करते हुए एक नयी सभ्यता और संस्कृति का विकल्प प्रस्तुत किया।

उत्तर सत्य के झूठ और फरेब के इस भ्रमित करने वाले क्रूर, हिंसक, घृणा और उन्माद के आक्रामक दौर में महात्मा गाँधी का सत्याग्रह और अहिंसक प्रतिरोध आज भी हमें सम्बल प्रदान करता है। आज जब किसान आत्महत्याएँ करने को मजबूर हों और गाँव उजड़ कर बर्बाद हो रहे हों तब उनके ग्राम स्वराज्य का सपना हमें तीव्रता से आकर्षित करता है। बड़े–बड़े उद्योगों, कॉरपोरेट घरानों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के वर्चस्व के कारण तबाह होते और दम तोड़ते छोटे–छोटे उद्योगों के दौर में उनके गृह उद्योग या कुटीर उद्योग की अवधारणा आवश्यक जान पड़ती है। आज जब बाजार ब्रांडेड विदेशी वस्तुओं से अटा पड़ा हो। विदेशी वस्तुओं और उत्पादों के उपभोग में हम गर्व महसूस करते हों और इस कारण मुनाफे का बड़ा हिस्सा विदेशों में जा रहा हो तो एक बार फिर गाँधी जी की स्वदेशी और आत्म–निर्भर विकास की अवधारणा हमारे समय की ज़रूरत जान पड़ती है। ऑटोमाइजेशन, मशीनीकरण ने मनुष्यों के हाथ से काम छीन कर उन्हें व्यापक पैमाने पर बेरोजगार बना दिया है। यंत्र मानवविरोधी होकर पूँजीपतियों के अकूत पूँजी संचय के साधन बन गये हैं। ऐसे में आज मशीनीकरण, यंत्र और मनुष्य के अन्तर्सम्बन्धों को पुनर्परिभाषित करने की जरूरत है। गाँधी जी ने ज्ञान को कर्म से जोड़ते हुए बुनियादी तालीम की अवधारणा विकसित की थी। आज ज्ञान और कर्म के बीच बड़ा फासला और अलगाव है। शिक्षा का निजीकरण और व्यावसायीकरण कर उसे मुनाफा कमाने का जरिया बनाया जा रहा है। ऐसे में गाँधी जी के शिक्षा सम्बन्धी विचार हमारे लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं। गाँधी जी ने मातृभाषा, हिन्दी पर काफी बल दिया था और यहाँ तक कहा था कि 'गाँधी अंग्रेजी भूल गया है'। गाँधी के उस देश में आज हर क्षेत्र में अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ रहा है। ऐसे में जातीय भाषा के सम्बन्ध में गाँधी जी के विचार आज भी प्रासंगिक है।

पिछले कुछ समय से धर्म के नाम पर देश को बाँटने की जो साजिश चल रही है। झूठ, हिंसा, उन्माद का जहरीला वातावरण तैयार किया जा रहा है। ऐसे में गाँधी जी के विचारों की स्वीकार्यता, जरूरत और प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए हमारे महाविद्यालय के हिन्दी विभाग ने 07 मार्च 2020 को उच्च शिक्षा विभाग, छत्तीसगढ़ शासन के सहयोग से 'वर्तमान संदर्भ में महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने का निर्णय लिया है। इस संगोष्ठी के मुख्य अतिथि और उद्घाटनकर्त्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक और युवा आलोचक प्रो. आशुतोष कुमार होंगे। वे बीज व्याख्यान देंगे। प्रसिद्ध गाँधीवादी चिंतक श्री कनक तिवारी, कवि एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री ललित सुरजन, वरिष्ठ कवि श्री रवि श्रीवास्तव, आलोचक श्री जय प्रकाश, एवं कथाकार श्री लोकबाबू, श्री कैलाश बनवासी, श्री आनंद बहादुर आदि स्थानीय बुद्धिजीवियों एवं साहित्यकारों की इस संगोष्ठी में भागीदारी हेतु सहमति प्राप्त हो चुकी है। इस संगोष्ठी में शोध पत्र की प्रस्तुति, विचार–विमर्श में हिस्सा लेकर इसे समृद्ध और सफल बनायें।

प्रस्तावित विषय –

1) घृणा, उन्माद और हिंसा के शोर में सत्य और अहिंसा की अकेली आवाज
2) असत्य के समकालीन प्रयोग और गाँधी जी का सत्याग्रह
3) गाँधी जी की दृष्टि में धर्म, अध्यात्म और नैतिकता
4) किसानों की आत्महत्याएँ, उजड़ते गाँव और महात्मा गाँधी के ग्राम स्वराज्य की परिकल्पना
5) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, कॉरपोरेट घरानों का बढ़ता वर्चस्व एवं महात्मा गाँधी के गृह और कुटीर उद्योग की अवधारणा
6) वैश्विक बाजार, विदेशी वस्तुओं का बढ़ता उपभोग और महात्मा गाँधी का स्वदेशी आन्दोलन
7) ऑटोमाइजेशन, मशीनीकरण के दौर में बढ़ती बेरोजगारी और गाँधी जी के द्वारा की गयी यंत्रों की आलोचना
8) शिक्षा का निजीकरण, बाजारीकरण और महात्मा गाँधी के शिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोण
9) अंग्रेजी का बढ़ता वर्चस्व और महात्मा गाँधी का भाषा चिंतन।
10) दलित उत्पीड़न, अस्पृश्यता के विरूद्ध आन्दोलन और महात्मा गाँधी
11) स्त्रियों के प्रति बढ़ती घरेलू हिंसा, यौन अपराध और महात्मा गाँधी का स्त्री विमर्श
12) पर्यावरण संरक्षण और महात्मा गाँधी के विचार
13) भारत का नया यथार्थ और महात्मा गाँधी का स्वप्न

शोधपत्र आमंत्रण / प्रेषण –

निर्धारित विषय और सहायक बिन्दुओं पर संगोष्ठी हेतु शोध पत्र आमंत्रित है। शोधपत्र ए–4 साइज के कागज पर एक ओर कम्प्यूटर से टाईप (कृतिदेव 010 फॉन्ट में अधिकतम 10 पृष्ठ) हार्ड एवं सॉफ्ट कॉपी के साथ 03 मार्च 2020 तक प्रस्तुत करना अनिवार्य है। शोधपत्र के साथ 300 शब्दों के आस–पास सारांश प्रेषित करें। शोध पत्र ई–मेल पर भेजा जा सकता है। ई–मेल का पता निम्नानुसार है–**gdtcollege@gmail.com**

पंजीयन शुल्क –

संगोष्ठी का पंजीयन शुल्क प्राध्यापकों / सहायक प्राध्यापकों हेतु 500 रू., शोधार्थियों हेतु 300 रू. अतिथि एवं ज. भा. के शिक्षकों हेतु 150 रू. एवं छात्र–छात्राओं हेतु 100 रू. निर्धारित है। पंजीयन शुल्क, पंजीयन प्रपत्र के साथ प्राचार्य, शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई के नाम पर बैंक ड्रॉफ्ट, चेक या नगद प्रेषित किया जा सकता है। पंजीयन के उपरांत शुल्क की वापसी नहीं होगी।

सुविधाएं –

बाहर से आये प्रतिभागियों को आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी। उनके जलपान और दोपहर के भोजन की व्यवस्था की जायेगी।

उतई / महाविद्यालय : एक परिचय –

छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में श्रम के सौन्दर्य के नगर भिलाई से लगा उतई उद्योग और कृषि, नगर और गाँव के सामंजस्य का बेहतर उदाहरण है।

ग्रामीण, कस्बाई और नगरीय संस्कृति के मिले–जुले रूप में तेजी से विकसित होते उतई को नगर पंचायत का दर्जा प्राप्त है। उतई सड़क मार्ग से दुर्ग रेल्वे स्टेशन से लगभग 15, 16 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। उतई, फुंडा, अमलेश्वर होते हुये यह सड़क मार्ग से रायपुर से भी जुड़ा है।

हेमचन्द यादव विश्वविद्यालय दुर्ग से संबद्ध शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई की स्थापना सन् 1989 में ग्रामीण क्षेत्र में उच्च शिक्षा के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से की गयी। निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर इस महाविद्यालय में कला एवं आधुनिकतम ज्ञान की रोजगारपरक शाखाओं से जोड़ने के उद्देश्य से स्नातक स्तर पर कला, वाणिज्य एवं विज्ञान के परम्परागत विषयों के साथ–साथ कम्प्यूटर साईंस, माइक्रोबायोलॉजी, बायोटेक्नालॉजी की कक्षाएँ भी संचालित की जा रही हैं। हिन्दी, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र एवं वनस्पति शास्त्र में स्नातकोत्तर अध्ययन, अध्यापन की सुविधा है। यहाँ के अनुभवी और उच्च शिक्षा प्राप्त प्राध्यापक, सहायक प्राध्यापक निरंतर शोध और अनुसंधान के कार्य से जुड़े रहकर विद्यार्थियों का कुशल मार्गदर्शन कर रहे हैं। हिन्दी विभाग में यहाँ डॉ. सियाराम शर्मा, डॉ. श्रीमती रीता गुप्ता एवं जनभागीदारी से श्री ज्ञानेश्वर प्रसाद और श्री अमरनाथ कार्यरत् हैं।

प्रतिभागी अपने आने की पूर्व सूचना 05 मार्च 2020 तक लिखित या मौखिक रूप से संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी को आवश्यक रूप से दे दें।

सलाहकार

श्रीमती शारदा वर्मा (आई.ए.एस.)
आयुक्त, उच्च शिक्षा संचालनालय, रायपुर (छ.ग.)

डॉ. (श्रीमती) विनोद शर्मा
संयुक्त संचालक, उच्च शिक्षा संचालनालय, रायपुर (छ.ग.)

संरक्षक

डॉ. कोमल सिंह शार्वा
(प्राचार्य)
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई
जिला–दुर्ग (छ.ग.)

संयोजक

डॉ. सियाराम शर्मा
(हिन्दी विभाग)
मो. नं.–93295–11024

सह–संयोजक

डॉ. श्रीमती रीता गुप्ता
(हिन्दी विभाग)
मो. नं.–94255–53571

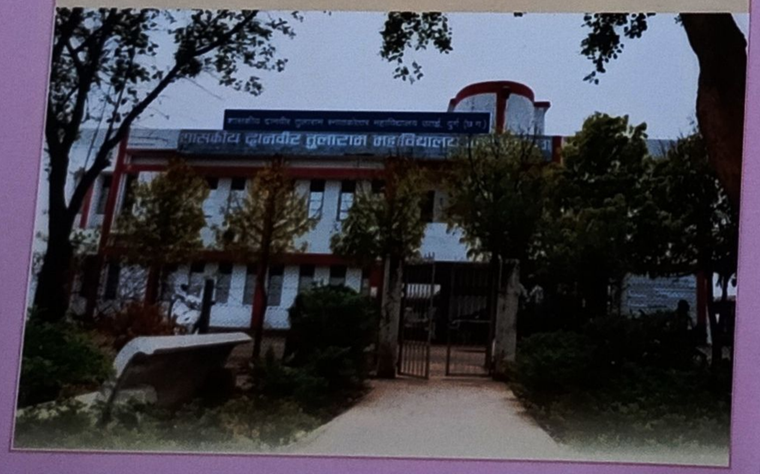

शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई, जिला–दुर्ग (छ.ग.)
राष्ट्रीय संगोष्ठी
'वर्तमान संदर्भ में महात्मा गाँधी
के विचारों की प्रासंगिकता'

प्रति,
प्रो./डॉ./श्री/श्रीमती/कु.....
.....
.....
.....
.....

प्रेषक –
डॉ. कोमल सिंह शार्वा
(प्राचार्य)
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उतई, जिला–दुर्ग (छ.ग.), 491107
दूरभाष क्रं.–0788–2673756

राष्ट्रीय संगोष्ठी

'वर्तमान संदर्भ में महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता'

दिनांक – 07 मार्च 2020 (शनिवार)

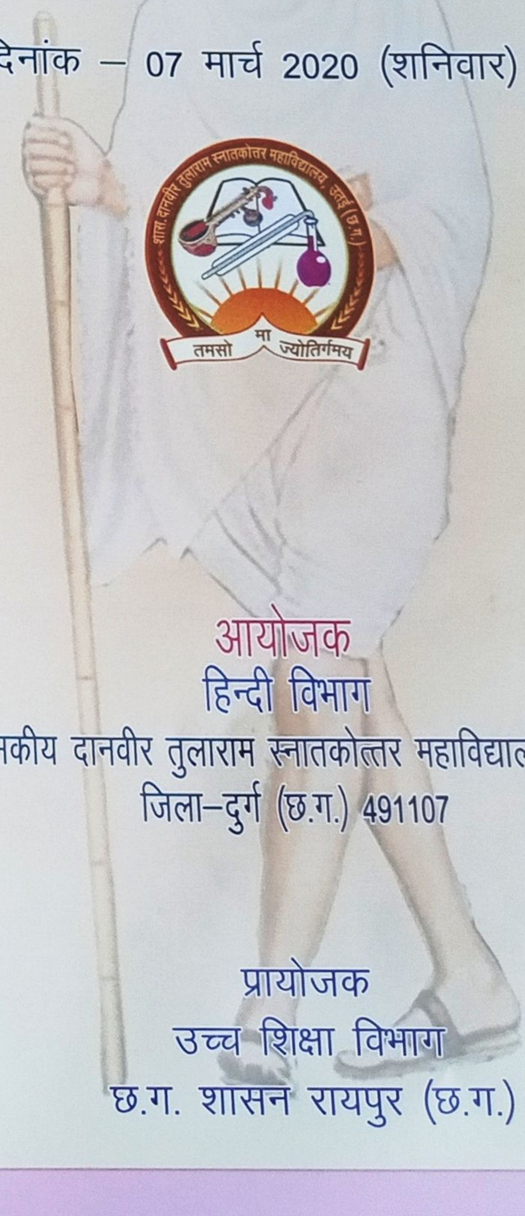

आयोजक

हिन्दी विभाग
शासकीय दानवीर तुलाराम स्नातकोत्तर महाविद्यालय उतई,
जिला–दुर्ग (छ.ग.) 491107

प्रायोजक

उच्च शिक्षा विभाग
छ.ग. शासन रायपुर (छ.ग.)